SANKHYA - PRAKRTI AND ITS GUNAS

सांख्य -प्रकृति और उसके गुण

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

भारतीय दार्शनिक हों या पाश्चात्य, जगत के कारण की समस्या उनके लिए एक प्रमुख समस्या के रूप में रही है।कुछ भारतीय दार्शनिक जैसे - चार्वाक, बुद्ध, न्याय - वैशेषिक और मीमांसा का मानना है कि विश्व का मूल कारण पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के परमाणु हैं। सांख्य इसका विरोध करता है।सांख्य का कहना है कि यदि विश्व का कारण परमाणु माना जाय तो सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या असम्भव है।विश्व में दो तरह की वस्तुएं दिख पड़ती हैं जिसमें एक स्थूल होता है और दूसरा सूक्ष्म।विश्व का कारण उसे माना जा सकता है जो स्थूल और सूक्ष्म दोनों की व्याख्या कर सके।परमाणुओं के द्वारा विश्व की स्थूल वस्तुओं जैसे - नदी ,पहाड़ ,टेबुल ,बृक्ष आदि की व्याख्या तो हो जाती है पर सूक्ष्म पदार्थ जैसे - मन, बुद्धि ,अहंकार आदि की व्याख्या सम्भव नहीं होती।इस तरह परमाणुओं को विश्व का कारण मानने से आधी वस्तुओं की ही व्याख्या हो पाती है।

सांख्य सूक्ष्म और स्थूल वस्तुओं अर्थात सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या प्रकृति की स्थापना कर करते हैं।इस तरह सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति ही वह मूल तत्व है जिससे सम्पूर्ण विश्व उत्पन्न हुआ है।यह जड़ होने के साथ ही साथ सूक्ष्म पदार्थ भी है इसलिए यह सम्पूर्ण विश्व की जिसमें स्थूल एवम सूक्ष्म पदार्थ हैं कि व्याख्या करने में समर्थ है।यद्यपि यह विश्व का मूल कारण है पर स्वयं कारणहीन है।सांख्य दर्शन में प्रकृति को प्रकृति के अतिरिक्त बिभिन्न नामों - प्रधान,अविद्या, माया , जड़ ,अव्यक्त,शक्ति, आविनाशिनी आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

प्रकृति को प्रधान कहा गया है क्योंकि वह विश्व का प्रथम कारण है।प्रथम कारण होने फलस्वरूप विश्व की समस्त वस्तुएँ प्रकृति पर आश्रित हैं पर वह स्वयं स्वतंत्र है।

प्रकृति को अविद्या कहा जाता है क्योंकि वह ज्ञान का विरोधात्मक है।

प्रकृति को माया कहा गया है।प्रकृति को माया इसलिए कहा गया है कि वह भिन्न-भिन्न वस्तुओं को सीमित करती है।प्रकृति को कारण माना गया है और विश्व की समस्त वस्तुयें कार्य।

प्रकृति को जड़ कहा गया है क्योंकि वह मूलतः भौतिक पदार्थ है।

प्रकृति अव्यक्त है।प्रकृति बिभिन्न वस्तुओं का कारण है जिसमें सम्पूर्ण विश्व कार्य के रूप में अंतर्भूत रहता है।

प्रकृति में निरन्तर गति विद्यमान होने के कारण इसे शक्ति कहा जाता है।

प्रकृति के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिये सांख्य दर्शन में निम्नलिखित तर्क दिये गए हैं : -

संसार की सभी दृष्टिगत वस्तुएँ एक-दूसरे पर निर्भर और सीमित हैं।सांख्य दार्शनिक का मानना है कि इन पदार्थों की उत्पत्ति निश्चित रूप से किसी असीम एवम आत्मनिर्भर तत्त्व से हुई होगी और यह असीम तत्त्व प्रकृति है।

संसार की सभी वस्तुएँ सत, रज और तम तीन गुणों से बनी हैं।इनके कारण भी त्रिगुणात्मिका प्रकृति का अस्तित्व सिद्ध होता है।

संसार में कारण-कार्य की एक श्रृंखला है ऐसा सांख्य दार्शनिक का मानना है।यहाँ कारण - कार्य रूप में तत्त्वों का विभाग किया गया है।कारण-कार्य का यह विभाग बुद्धि के कारण के रूप में प्रकृति को सिद्ध करता है।

सांख्य दर्शन में जैसे कारण-कार्य विभाग से आविर्भाव का क्रम होता है, उसी तरह तिरोभाव का विपरीत क्रम में भीबतलाया गया है।जैसे घड़ा टूटने पर मिट्टी में मिल जाता है उसी तरह प्रलय काल में पृथ्वी आदि भूत तन्मात्राओं में तन्मात्राएँ अहंकार में, अहंकार बुद्धि में और बुद्धि अव्यक्त अर्थात प्रकृति में लीन हो जाती हैं, इस तरह प्रकृति का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है।

प्रकृति के विश्लेषण करने से प्रकृति में तीन गुण - सत्व, रजस और तमस पाये जाते हैं।साधारणतः गुण का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है पर सांख्य दर्शन में गुण शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में हुआ है।यहाँ गुण का अर्थ तत्त्व या द्रव्य से है।प्रकृति सत्व, रजस और तमस की साम्यावस्था है।सत्व, रजस और तमस प्रकृति के घटक हैं और उसमें साम्यावस्था में रहते हैं।इनमें न कोई अभिभावी(predominant)और न कोई अभिभाव्य(subordinate)।प्रकृति त्रिगुणात्मिका है, वह गुणों को धारण करने वाली एक पृथक सत्ता नहीं है।गुण प्रकृति के स्वरूप है न कि उसके गुण।प्रकृति के इन तीन गुणों की व्याख्या एक-एक कर निम्न प्रकार से है : -

सत्व - यह स्वयं प्रकाशपूर्ण है और अन्य वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है।सत्व के कारण ही सूर्य पृथ्वी को आलोकित करता है।यह ज्ञान का प्रतीक होता है।सुखात्मक अनुभूति जैसे- हर्ष, उल्लास,संतोष और तृप्ति इत्यादि सत्व के ही कारण हैं।इसका रंग उजला होता है।

रजस - यह स्वयं चलायमान है और क्रिया प्रेरक है।इसके कारण ही मन चंचल होता है और इन्द्रियाँ अपने विषयों की ओर आकर्षित होती हैं।रजस के प्रभाव में आकर ही सत्व और तमस जो स्वयं निष्क्रिय होते हुए भी सक्रिय हो पाते हैं।सभी प्रकार के दुःखात्मक अनुभूतियाँ -विषाद, चिन्ता, असंतोष, अतृप्ति आदि रजस के ही कार्य हैं।इसका रंग लाल होता है।

तमस - यह अज्ञान या अंधकार का प्रतीक है।यह सत्व के विपरीत है, सत्व ज्ञान के प्राप्ति में सहायक होता है पर तमस ज्ञान प्राप्ति में बाधक होता है।यह निष्क्रियता और जड़ता का द्योतक है।तमस के कारण ही मनुस्यों में आलस्य और निष्क्रियता का उदय होता है। इसका रंग काला होता है।

सांख्य के गुण हमेंशा क्रियाशील और गतिमान रहते हैं।परिवर्तित होना इसका स्वरूप है।गुणों में दो प्रकार का परिवर्तन होता है - सरूप परिवर्तन और विरूप परिवर्तन।

सरूप परिवर्तन में एक गुण अपने वर्ग के गुणों में स्वतः आकर चिपक जाता है। यह परिवर्तन विनाश या प्रलय के समय होता और इस परिवर्तन में सत्व का रूपांतरण सत्व में, रजस का रूपांतरण रजस और तमस का रूपांतरण तमस में होता है।

विरूप परिवर्तन सरूप परिवर्तन के विपरीत है।जब प्रकृति में विरूप परिणाम सम्भव होता है तब विकास की क्रिया का आरम्भ होता है।विरूप परिवर्तन के समय सत्व का रूपांतरण तमस में और तमस का रूपांतरण रजस में होता है।